Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 5, Print Issue 1&2 - 2020, Pg. No. 1-3
Peer Reviewed Journal

Research Article

प्राचीन भारत में पर्यावरण पर चिन्तन

Rameshwar Pandey

Assistant Professor, Department of Ancient History, National Post Graduate College, Barhalganj Gorakhpur, Uttar Pradesh, India.
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202001

I N F O

E-mail Id:
rameshwarnpg@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0001-2969-6174

Date of Submission: 2020-03-25
Date of Acceptance: 2020-04-29

सारांश

इस ज्ञानवर्धक आलेख में लेखक ने प्राचीन भारत में पर्यावरण पर चिंतन का प्रभावशाली ढंग से विचारपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया है। सूक्ष्म अन्वेशण और अंतर्दृष्टिपूर्ण अवलोकनों के माध्यम से, लेखक ने प्राचीन भारत के लोगों की अपने परिवेश के साथ गहरी श्रद्धा और गहरे संबंध पर प्रकाश डाला है। यह अध्ययन उस युग के दौरान प्रचलित पर्यावरणीय चेतना के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है, जो मनुष्य और प्रकृति के बीच जटिल अंतरसंबंध पर प्रकाश डालता है। सांस्कृतिक प्रथाओं, दार्शनिक दृष्टिकोण और ऐतिहासिक अभिलेखों की जांच करके, लेखक ने इस बात की व्यापक समझ सामने लाई है कि प्राचीन भारत में रोजमर्रा की जिंदगी के ताने–बाने में पर्यावरण संबंधी चिंताएं कैसे जुड़ी हुई थीं। लेख न केवल उस अवधि में पर्यावरणीय स्थिरता के महत्व को स्पष्ट करता है बल्कि यह भी मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि पिछली विचारधाराएं और दृष्टिकोण समकालीन पर्यावरणीय प्रवचन को कैसे सूचित कर सकते हैं। कुल मिलाकर, यह विद्वतापूर्ण कार्य पर्यावरण पर प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण के बारे में हमारे ज्ञान को समृद्ध करता है और सामाजिक मूल्यों और व्यवहारों को आकार देने में पर्यावरण–चेतना की कालातीत प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

मुख्य बिंदुः प्राचीन, भारत, पर्यावरण, वेद, पुराण, महाभारत, ऋग्वेद, अहिंसा।

पर्यावरण की समस्या से पूरा विश्व संत्रस्त है। इससे सम्पूर्ण मानव जाति एवं जीव–जन्तु पीडित है और प्राकृतिक सम्पदा भी निरन्तर प्रभावित होकर विनाश की ओर बढ़ रही है। पर्यावरण समस्या के कारण प्रतिवर्ष लाखों प्राणी काल का ग्रास बन रहे हैं। इनसे मुक्ति पाने के लिए प्रतिवर्ष अरबों रुपये व्यय किये जा रहे हैं फिर भी पर्यावरण समस्या से मुक्ति का उपाय नहीं दिखाई देता।

प्राचीन भारत में पर्यावरण समस्या कहीं नहीं थी। जड चेतन जगत सुरक्षित था। प्राचीन ऋषि एवं चिन्तक विद्वान सभी पर्यावरण के प्रति पूर्णत. जागरुक थे। प्राचीन भारत में यज्ञ पूजा पद्धति सर्वत्र प्रचलित थी। राजा, गृहस्थ, वानप्रस्थी, सन्यासी सभी यज्ञ द्वारा वायु को शुद्ध रखते थे। वनस्पति जगत् और पशु जगत् को पुत्रवत मानकर उनका पालन और संरक्षण किया जाता था।

जून 1992 में ब्राजील के रीयो शहर में हुए पृथ्वी सम्मेलन में भारत सरकार ने यह स्पष्ट किया था कि पर्यावरण संरक्षण भारत की जनता के लिए नई संकल्पना नहीं है बल्कि प्राकृतिक सम्पदा के प्रति अनुराग, आदर एवं उसको संभालकर रखने की भारतीय परम्प. रा बहुत पुरानी है। पर्यावरण सम्बन्धी आधारभूत अवधारणाओं का प्रथम दर्शन वेद वाड्मय में होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से प्राकृतिक सम्पदा और वन्य जीवन का संरक्षण आस्था और विष्वास का विषय रहा है। जिसका प्रतिविम्व सामान्य जीवन में दिखाई देता है देव कथाओं, कहानियों, धर्म, कला और संस्कृति में विद्यमान है। सम्राट अशोक ने वन्य जीवन और वन सम्पदा की रक्षा करना एक राजा का कर्तव्य माना था। उन्होने वनों को नष्ट करने तथा पशुओं का वध करने पर रोक लगाते हुए शिलाखण्डो पर आदेश अंकित कराये थे। यह ऐतिहासिक प्रमाण वर्तमान में भी विद्यमान है और पूरे विश्व में प्राकृतिक सम्पदा के सरक्षण हेतु किया गया प्रथम उपाय है।

प्रकृति एवं मानव जाति के सम्बन्ध के सूचक अनेक दृष्टान्त प्राचीन भारतीय साहित्य में मिलते है वैदिक वाड्मय में मानव और प्रकृति के

Copyright (c) 2020: Author(s). Published by Advanced Research Publications

मध्य जिन गूढ़ अन्तःसम्बन्धों का प्रतिपादन हुआ है उसमे पर्यावरण के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा एवं चेतना परिलक्षित होती है। ऋग्वेद में अहिंसा, संवेदनशीलता शान्ति, अपरिग्रह और जनसंख्या नियंत्रण जैसे सद्गुणों के विकास पर बल दिया गया है। मनुष्य को मनुष्य की सभी प्रकार से रक्षा करनी चाहिए।[1] वेदो मे तत्वदर्शी ऋषियों ने प्रारम्भ में सैकडो मंत्रो के द्वारा पर्यावरण के प्रति चेतना उत्पन्न की थी। अथर्ववेद के भूमि सूक्त का एक मंत्र वृक्ष की ओर से चेतावनी देता है कि हे। मानव तू मुझे मत काट अन्यथा मैं तुझे काट दूंगा। भूमि के अनावश्यकखनन का वेदों में बार–बार निषेध किया गया है। जल को भी शुद्ध करने के अनेक कथन वेदों में उल्लिखित है और अधिक से अधिक वनस्पति उगाने और उसकी रक्षा की प्रेरणा दी गयी है। यजुर्वेद में कुशल–मंगल रखने वाले फल युक्त वनस्पति और औषधि को प्रचुर मात्रा में उगाने की प्रेरणा दी गयी है।

अर्थववेद के मंत्रों से ज्ञात होता है कि तत्कालीन मानव पर्यावरण विषयक अवधारणाओं से पूर्ण परिचित था। एक मंत्र में यह प्रश्न उठाया गया है कि भूमि को किसने छाया हुआ है ? किसने धुलोक को घेरा है? किसने महिमा से पहाड़ो को ढका है? पुरुष किससे कर्मों को करता है? इस प्रश्न के उत्तर में कहा गया है कि जल, वायु और औषधियों ने इस भुवन को आच्छादित कर रखा है।[2] चारो वेदों में पर्यावरण से सम्बन्धित अनेक सन्दर्भ प्राप्त होते हैं। ऋषियों में पर्यावरण की शुद्धता एवं स्वच्छता के प्रति इतनी जागरुकता थी कि वे कहते थे कि मानव के लिए अंतरिक्ष में रहने वाला वायु पर्यावरण को शुद्ध करता रहे, जल अमृत वर्षा करे, सूर्य शरीर के लिए सुखकर तपे जिससे वह दीर्घायु हो सके।[3] शतपत ब्राह्मण में कहा गया है कि मनुष्य अनृत इसीलिए है कि वह अपने भीतर आलस्य, प्रमाद, हिंसा, द्वेष, क्रोध आदि के द्वारा पर्यावरण का दूषित करता है। देवता जीवन को सुख देने वाला वर्षा, प्रकाश और वायु आदि का दान करता है तथा पर्यावरण संवर्धन करता है।[4]

प्रकृति की नैसर्गिक छवि रामायण में अंकित हुआ है। रामायण में प्रकृति के कुछ ऐसे चित्र मिलते है। जिसमें प्रकृति की क्रिया या उसकी स्थिति का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। नदी, पहाड़, वृक्ष, लता, ऋतु आदि प्राकृतिक दृश्यों को वाल्मिकी रामायाण में बड़े मार्मिक एवं मनोहारी रुप में चित्रित करते है। रामायण में अनेक नदियों यथा गंगा, यमुना, तमसा, गोदावरी, मंदाकिनी आदि का उल्लेख प्राप्त होता है। मन्दाकिनी नदी की शोभा का वर्णन राम के शब्दों में दृष्टव्य है– प्रिय अब मन्दाकिनी नदी की शोभा देखो, हंस और सारसो से सेवित होने के कारण यह कितनी सुन्दर जान पड़ती है। इसका किनारा बड़ा ही विचित्र है, नाना प्रकार के पुष्प इसकी शोभा बढ़ा रहे है।

''फल और फूलों के भार से लदे हुए नाना प्रकार के तटवर्ती वृक्षों से घिरी हुई यह मन्दाकिनी कुबेर के सौगन्धिक सरोवर की भाँति सब ओर से सुशोभित हो रही है।''[5]

महाभारत में संसार को पीपल का वृक्ष कहा गया है जिसके मूल में शिव है, शाखा ब्रहम रूप है और वेद जिसके पर्ण है।[6] वनस्पति औषधियाँ सूर्य के प्रकाश में भोजन बनाने की प्रक्रिया के अन्तर्गत निरन्तर प्राणवायु अर्थात आक्सीजन का उत्पादन करते हैं और विषैली तथा दूषित अर्थात कार्बन डाई आक्साइड का अवशोषण करते हैं। पर्यावरण सन्तुलन के लिए महाभारत में वृक्षों को धर्म पुत्र मानकर इनके सरोपन व संवर्धन को श्रेयस्कर बताया गया है।[7] यहाँ वृक्षों को सजीव एवं चेतन स्वीकार किया गया है तथा कहा गया है कि वृक्षों को भी सुख एवं दुःख का अनुभव होता है और कट जाने पर उसकी खण्डित शाखायें पुनः बढ़ जाती है। अतः उनमें जीव की सत्ता मानी जाती है।[8]

सूर्य समस्त पर्यावरण का पोषक है, सूर्य के पर्यावरण के पोषक और रक्षक होने के कारण उसे क्रमशः पूषन और मित्र नाम से पुकारा गया है। सूर्य किरणों में रोग निवारण क्षमता है सूर्य के प्रभाव से हृदय रोग एवं पीलिया समाप्त होता है। स्कन्द पुराण में सूर्य की पूजा करने से 18 प्रकार के कुष्ठो, सभी पापों और रोगों से मुक्ति सम्भव बतायी गयी है। सूर्य की किरणों में पर्यावरण को पुष्ट करने वाले ऐसी शक्ति है जिससे वह पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले तत्वों को नष्ट कर देता है। भविष्य पुराण[9] और ब्रह्म पुराण[10] में उल्लिखित है कि वृष्टि प्रदाता होने से सूर्य शस्योत्पादक है। मारकण्डेय पुराण[11] में कहा गया है कि सूर्य औशधियों को पकाने के लिए गर्मरुप और हेमन्त काल में शस्य पोषण के लिए हिम, वर्षा आदि के द्वारा शीतल मुर्ति रुप धारण करता है।

पर्यावरण पर वृक्षों के पाँच प्रमुख उपकार है जिन्हे वराह पुराण में पाँच महायज्ञ कहा गया है।[12] वे गृहस्थों को ईधन देकर, पथिकों को छाया तथा विश्राम स्थल देकर, पक्षियों के नीर्ण बनकर तथा पत्तों, जड़ो एवं छालों से समस्त जीवों को औषधि देकर उनका उपकार करते हैं। शिवपुराण[13] में भी कहा गया है कि वृक्ष अपने पत्र, पुष्प, छाया, वल्कल एवं काष्ठ से सबका उपकार करते हैं। पर्यावरण के लिए औषधि वनस्पतियों की उपादेयता को पुराणों में दर्शाया गया है। वृक्षों के संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए पुराणकारों ने वृक्षोच्छेदन करने वाले को नरकगामी तथा वृक्षारोपड़ करने वाले को नरक न जाने वाला कहा गया है।[14] मत्स्य पुराण[15] में कहा गया है कि सभी पेड़ों की जड़ो में जल पूरित कुम्भ रखे जाने चाहिए। वृक्षों के स्वास्थ्य और संवृद्धि के लिए उसी प्रकार यज्ञ करना चाहिए जिस प्रकार लोकपालों और इन्द आदि देवों के निमित्त यज्ञ किया जाता है।

जीव–जन्तु भी पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। पशु–पक्षी, कीट मानव के चिर सहचर ही नहीं अपितु निकट सम्बन्ध रखते हुए पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। पृथ्वी पर ये मानव से पूर्व आस्तित्व में आये हैं। मानव की उत्पत्ति से पूर्व इन्होने पर्यावरण को संतुलित करने का प्रयास कर मानव के लिए आवश्यक पर्यावरणीय परिस्थिकीय को प्रस्तुत किया। पर्यावरण में जीव–जन्तु के योगदान व महत्वपूर्ण स्थिति को देखते हुए पर्यावरणविदों का मानना है यदि पृथ्वी पर मानव विलुप्त हो जाये तो प्राकृतिक व्यवस्था में कहीं भी किसी प्रकार का असंतुलन नहीं होगा लेकिन यदि पृथ्वी पर वन्यजीवन तथा इसके प्राकृतिक आवास नष्ट हो जाय तो सम्पूर्ण परिस्थितीकीय व्यवस्था असंतुलित हो जायेगी। इसीलिए भागवत पुराण[16] में कहा गया है कि हरिण, ऊँट, गधा, बन्दर, चूहे. सरीसृप, पक्षी और मक्खी आदि

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202001

को गृहस्थों को अपने पूत्रों के समान समझना चाहिए। नरसिंह पुराण[17] में पक्षी हिंसा को घोर परिणाम बताते हुए कहा गया है कि जो दुष्ट बुद्धि वाला पक्षी को पकाता है उसका स्थान, तीर्थ, जप व यज्ञ व्यर्थ हो जाते हैं। इसी प्रकार पद्म पुराण में गोदान, गोस्पर्श आदि को पूर्णदायक तथा गो वध को नरक की प्राप्ति का कारण बताया गया है।[18]

इस प्रकार प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में यथा बौद्ध ग्रन्थ, जैन ग्रन्ध, चरक संहिता, कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् आदि अनेक तथ्य पर्यावरण से सम्बन्धित प्राप्त होते हैं। जिससे हमें पर्यावरण के संरक्षण के प्रत्ति सदैव सचेत रहना चाहिए।

निष्कर्ष

इस खोज में, लेखक ने प्राचीन भारत में पर्यावरण पर सफलता पूर्वक चिंतन प्रस्तुत किया है, जिसमें उस युग में प्रचलित पर्यावरणीय मुद्दों पर चिंतन के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। सावधानीपूर्वक अध्ययन और विश्लेषण के माध्यम से, लेखक ने प्राचीन भारत के ऐतिहासिक संदर्भ में पर्यावरण संबंधी चिंताओं को कैसे देखा और निपटाया गया, इसके जटिल विवरणों की गहराई से जांच की। उस काल के विभिन्न ग्रंथों, शिलालेखों और स्रोतों की जांच करके, लेखक ने प्राचीन भारत में प्रचलित पर्यावरण चेतना से संबंधित दृष्टिकोण, प्रथाओं और मान्यताओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त की। यह प्रयास उन गहरी परंपराओं और ज्ञान पर प्रकाश डालता है जो उस समय समाज और प्रकृति के बीच संबंधों को निर्देशित करते थे। इस जांच के निष्कर्ष उन तरीकों की सूक्ष्म समझ प्रदान करते हैं जिनसे हमारे पूर्वजों द्वारा पर्यावरणीय मुद्दों को समझा और प्रबंधित किया गया था, जिससे मानव सभ्यता और प्राकृतिक दुनिया के बीच संबंध के बारे में हमारा ज्ञान समृद्ध हुआ। शोध के निष्कर्ष हमारे वर्तमान पर्यावरण संरक्षण प्रयासों और टिकाऊ प्रथाओं को सूचित करने के लिए अतीत से सबक लेने के महत्व को रेखांकित करते हैं।

संदर्भः

1. ऋग्वेद, 6.75. 14
2. अथर्ववेद, 10.2.8, 18.1.7
3. वही, 8.1.5
4. शतपथ ब्राहमण, 1.1.1.4
5. वा०रा०, 2.95.3, 4
6. महाभारत भीश्म पर्व, 2.19
7. वही, अनुशासन पर्व, 5.30–31
8. वही शान्ति पर्व, 185.5–18
9. भविष्य पुराण, 1.54.55
10. ब्रहम पुराण, 31.4
11. मारकण्डेय पुराण, 101.22–23
12. वराह पुराण, 170.38–39
13. शिव पुराण, 5.12.17–21
14. पद्म पुराण, 6.23.13, वराह पुराण, 12.2.39
15. मत्स्य पुराण, 170.37
16. भागवत पुराण, 7.14.9
17. नरसिंह पुराण, 13.44
18. पद्म पुराण, 50.164–192

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202001